वेदान्त मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २३ सितम्बर - २०२३ प्रकाशन - ०९

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

सितम्बर २०२३

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	05
2.	पू. गुरुजी का संदेश	06
3.	वेदान्त लेख	10
4.	वाक्यवृत्ति	14
5.	गीता और मानवजीवन	20
6.	जीवन्मुक्त	26
7.	मनु और दशरथ चरित्र	29
8.	कथा	33
9.	मिशन-आश्रम समाचार	36
10.	आगामी कार्यक्रम	65
11.	इण्टरनेट समाचार	67
12	लिन्क	68

सितम्बर 2023

आत्मनः सच्चिदंशश्च बुद्धेर्वृत्तिरिति द्वयम्।
संयोज्य चाविवेकेन जानामीति प्रवर्तते।।

(श्लोक - २५)

आत्मा का सत्-चित् अंश और बुद्धि-वृत्ति इन दोनों के अविवेकपूर्ण संयोग से 'मैं जानता हूं' इस वृत्ति की उत्पत्ति होती है।

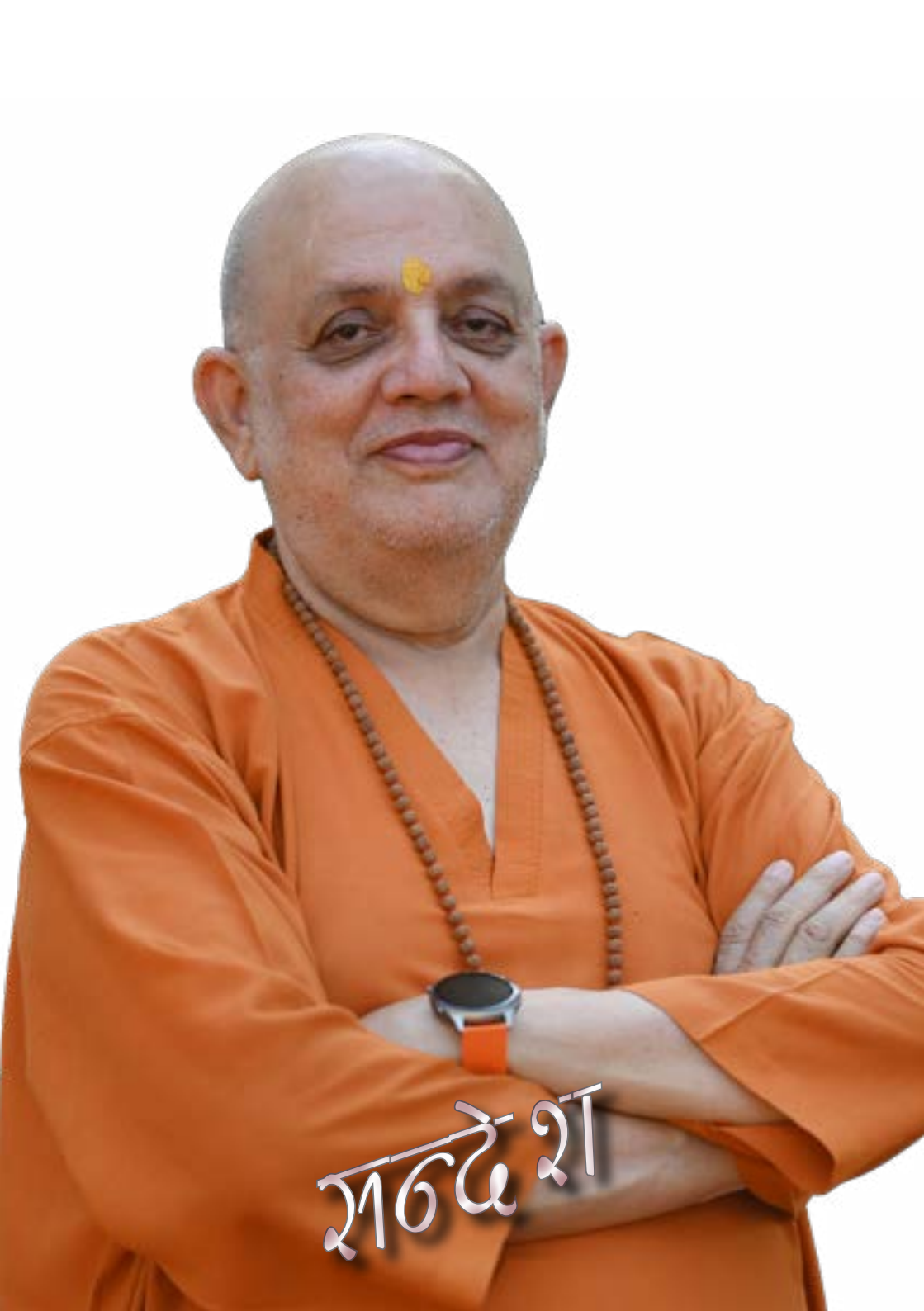
सन्देश

उपरति – स्वधर्मानुष्ठानम्

उपरति आत्मज्ञान के लिए आवश्यक सम्पत्ति की तरह बताई जाती है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है, उप अर्थात् समीप और रति अर्थात् रमण करना। अपने आप में रमना यह उपरति है। उपरति तब ही सम्भव होती है, जब कोई अपने अन्दर धन्य व कृतार्थ होता है। अपने आपकी यथावत् स्वीकृति है, जहां परिवर्तन की कोई आकांक्षा नहीं है। ऐसी मनोस्थिति जहां प्रत्येक प्राप्त परिस्थिति में धन्यता की वृत्ति बनी हुई है। ऐसी धन्यता भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति का अद्‌भुत प्रसाद होता है। जहां प्रभु से कुछ भी मांगने की अपेक्षा नहीं है। जो कुछ भी प्राप्त है, उसे प्रभु की कृपा देखा जा रहा है। परमात्मा के प्रति अत्यन्त समर्पण है, जहां स्वयं को भी परमात्मा के हाथ में निमित समझा जा रहा है। वहां मन में प्रभु की बरसती हुई कृपा देखकर कृतज्ञता की भावना है। अतः निष्क्रियता भी नहीं है, किन्तु प्रभु के द्वारा प्राप्त प्रत्येक परिस्थिति को प्रभु की आज्ञा मानकर उसकी सेवा

उपरति – स्वधर्मानुष्ठानम्

के लिए कर्म की अभिव्यक्ति है। जीवन में चिन्ता-भय आदि का नामोनिशान नहीं है। वह प्रत्येक क्षण धन्यता का जीवन जीते हैं।

एक ग्रंथ में आचार्य ने उपरति की व्याख्या करते हुए बताया कि स्वधर्म अनुष्ठानमेव। परमात्मा ने प्रत्येक जीव की विशेष प्रकृति बनाई है। उसके अनुरूप मन के अन्दर सहज प्रवृत्ति वा झुकाव होता है। उसे ही वर्ण अथवा स्वधर्म कहा जाता है। अपने स्वधर्म के अनुरूप जीना ही प्रभु के अधीन होकर, उनकी आज्ञा का पालन करके जीना है। जब कोई व्यक्ति अपने स्वधर्म को जीता है, वहां उन कर्म में कोई चेष्टा वा प्रयास नहीं लगता है। अतः कर्म के समय भी कर्म के बोझ से मुक्त रह पाता है, उसमें सहजता का आनन्द व अपने अन्दर विश्रान्ति का अनुभव करता है। कर्तापन के बोझे से रहित होने की वजह से कर्तृत्व का अभिमान भी शिथिल होता है।

ऐसी स्थिति में स्वधर्म रूप कर्म मात्र आनन्द का हेतु बन जाता है, अतः उसके लिए आनन्द की प्राप्ति की, भविष्य की कोई गणित नहीं होती है। वह कर्मफल की चिन्ता से मुक्त हो जाता है। कर्मफल के प्रति चिन्ता व आसक्ति उसे

उपरति – स्वधर्मानुष्ठानम्

भविष्य अथवा कल्पना के जगत में ले जाती है। इस प्रकार मनुष्य को अपने आपसे दूर कर देती है। जिसकी वजह से मूल्यवान वर्तमान के क्षण हाथ से फिसल जाते हैं। अन्त में भूतकाल का स्मरण करके पश्चाताप मात्र होता है। भूत और भविष्य में यात्रा ही अपने आपसे दूर जाना है। स्वधर्म के अनुष्ठान से वह अपने आपमें रमता है। जो व्यक्ति भूत की ग्लानि और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होता है, वह ही वर्तमान में उपलब्ध वस्तु के बारे में विचार करके गहराई में जाने में समर्थ होता है। कर्मफलासक्ति से मुक्ति उसे अन्तर्मुख बनाती है। वह अपने स्वस्वरूप के बारे में गहराई से विचार करने में समर्थ हो पाता है। अतः स्वधर्म अनुष्ठान को ही उपरति बताया।

इस मूल्य को विकसित करने के लिए प्रभु की बरसती हुई कृपा को देखकर धन्यता होनी चाहिए। पूरी सृष्टि उनकी सुन्दर कृति है, तथा हम भी उनकी कृति है। इस बात को जानते हुए अपने होने मात्र में धन्यता हो तथा प्रभु ने जिस विशेष प्रकृति व सामर्थ्य से नवाजा है, उसे पहचान कर समग्रता से जीना चाहिए। जो यह करने में समर्थ होता है, वह उपरम नामक सम्पत्ति से युक्त होता है। बाहर की पराधीनता से मुक्ति का बल इसीसे प्राप्त होता है।

वेदान्त लेख
अहम् ब्रह्मास्मि

तत्व में जाग्रति का स्वरूप

यह विचारणीय है कि तत्त्वज्ञान में जाग्रति होना किसे कहते है? सामान्य व्यक्ति यह सोचता है कि हम जीव, एक विषयी बने रहकर ब्रह्मरूप किसी विषय को जानते है, यह जानने से ही कृतार्थता होगी। ज्ञाता किसी चीज को जानना चाहता है। विशिष्ट चीज को जानने से ज्ञाता धन्य हो जाएगा। यह इन दोनों पक्ष में यह दोष दीखता है कि ज्ञाता व ज्ञान भी बना रहेगा। यदि विज्ञाता जाननेवाला बना रहे तो वह जीवन में तत्त्व का ज्ञान प्राप्त नहीं करता।

जीव जैसा है, वैसा बना रहे और ज्ञान प्राप्त करना यह अजहद् लक्षणा से महावाक्य के अर्थ को घटाना है। जिज्ञासु में ज्ञातापन बना रहे फिर प्रबोध हो ऐसा तत्त्वज्ञान में नहीं। जीव कभी भी तत्त्व का ज्ञान प्राप्त व ब्रह्म का

तत्व में जाग्रति का स्वरूप

साक्षात्कार नहीं करता। जीव का जीवत्व, व्यक्तित्व जिस समय बाधित ाहेता है, उस समय जो हमारा परिचय वो शाश्वत है। दूसरा जीव का पूर्ण निषेध भी आपेक्षित नहीं। क्योकि वो जहद लक्षणा है। उससे जीव ज्यों का त्यों बना रहकर कुछ क्षण शून्यता में जगता है। एवं न जहद लक्षणा से, न ही अजहत लक्षणा से। ज्ञाता अपने उपर,

वेदान्त का ज्ञान निषेधात्मक है, जहां अपने उपर के अध्यारोप का अपवाद मात्र किया जाना है।

ज्ञाता के ज्ञातृत्व ाक चिन्तन करता है। वो कौन है, कैसे बना है, यह गहराई से विचार किया जाना चाहिए। यह शाश्वत व टिकाउ नहीं है। ज्ञाता मान कर, उसे ही परं सत्य समझ लिया है। ज्ञात किसी चीज को प्रकाशित करता है। विज्ञाता जब भी किसी चीज को जानता है वो परं सत्य नहीं होता है। अर्तः जो विज्ञाता है, उसके बारे में विचार करे। विज्ञाता का विज्ञातृत्व स्वजनित नहीं किन्तु नैमित्तिक होता है। कर्ता का

तत्व में जाग्रति का स्वरूप

कर्तृत्व परजनित होता है। दृष्टाका दृष्टृत्व औपाधिक, नैमित्तिक है। अतः विचार करे तो जहां विज्ञाता का विज्ञातृत्व बाधित होता है, तो जो अवशिष्ट वहां विज्ञाता अपने से पृथक किसी विज्ञेय को नहीं जानता, तब त्रिपुटी बाधित हो जाती है। विज्ञाता शून्य भी नहीं होता है तथा विज्ञाता बना भी नही रहता। ऐसा विवेक करना कि विज्ञाता का विज्ञातृत्व बाधित हो जाएं। यह नैमित्तिक है, यह दीख जाएं तो उससे स्वतंत्र तत्व को दखने लगते है। हम विज्ञातृत्व ाके पकड कर नहीं बैठते है। यद्यपि मैं है किन्तु उसमें नैमित्तिक अंश बाधित हो गया। जहां समस्त उपाधि का निषेध तो विज्ञाता का विलक्षण रहस्य समझमें आता है। वो न विज्ञाता में, न विज्ञोय में आता है। वो ऐसा तत्व जहां कोई खण्ड नही।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – ०१

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः
मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं
तस्यान्घ्रि पद्मं
प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

जिनके कृपाप्रसाद से हम आत्मरूप से यह जानते हैं कि हम ही विष्णु स्वरूप है और यह सारा विश्ध्श्व मुझमें ही कल्पित है। उन हमारे गुरुदेव के कमलचरणों में हम नित्य नमस्कार करते हैं।

वाक्यवृत्ति

आचार्य ने ग्रंथ के आरम्भ में अपने लक्ष्यस्वरूप भगवान् विष्णु को नमस्कार करते हुए मंगलाचरण किया और अब उन लक्ष्य की सिद्धि के हेतुभूत अपने श्रीगुरु के चरणकमल में नमस्कार करते हैं।

तस्यान्घ्रिपद्मं..... - हम उनके चरणकमल में नित्य नमस्कार करते हैं, जिनके प्रसाद से हमने यह जाना कि हम ही स्वयं विष्णुस्वरूप है और हममें ही समस्त जगत कल्पित है। गुरु के प्रति श्रद्धा और चरणों में भक्ति से ही ज्ञान के द्वार उद्घाटित होते है। भक्ति-श्रद्धा से ही संवाद सम्भव होता है। गुरुचरण में श्रद्धा-भक्ति होने का अभिप्राय उनके प्रत्येक वचनों में विश्वास होना तथा भक्ति हृदय का वह भाव है, जिसकी अभिव्यक्ति सेवा और समर्पण के माध्यम से होती है। सेवा से

मन के दुराव, अभिमान, राग-द्वेष आदि दोष शिथिल होते जाते है। मन की पारदर्शिता होने लगती है। परिणामस्वरूप गुरु के समक्ष शिष्य का मन एक उद्घाटित किताब की तरह होता है। उसमें ज्ञान के लिए बाधा रूप कौन कौन से दोषादि है, यह सब स्पष्ट होने लगते है। अन्तःकरण की ज्ञान के लिए उपलब्धता होने लगती है। उसे ही गुरु से ज्ञान की दृष्टि का प्रसाद प्राप्त होता है। प्रसाद से अभिप्राय अपने कर्तृत्व वा ज्ञातृत्व का अभिमान समाप्त होकर जीवभाव बाधित होना है।

गुरु के प्रति अनन्य भक्ति से जो ज्ञान की दृष्टि प्राप्त होती है, उसका स्वरूप आचार्य बताते हैं कि 'अहमेव विष्णुः, मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च'। हम ही विष्णु अर्थात् जगत के अधिष्ठानभूत तत्त्व, जो जीव और ईश्वर का भी सत्य है। जहां

जीवभाव पूर्णतः बाधित हो गया है। समस्त भेद की समाप्ति होकर हम एक अखण्ड विष्णुस्वरूप तत्त्व है, इस अखण्ड तत्त्व को अपनी आत्मा की तरह जानते हैं। हममें ही समस्त नामरूपात्मक, भेदयुक्त जगत कल्पित है। यह दृष्टि से युक्त होने का अभिप्राय अज्ञान नष्ट होना है। एक बार अज्ञान नष्ट होता है, तो पुनः नहीं आता है। अतः इस तथ्य में जाग्रति की अवस्था नित्य रहती है। उसमें विस्मृति वा पुनः अज्ञान की अवस्था में पुनरावर्तन की कोई सम्भावना ही नहीं है। ऐसी विलक्षण अलौकिक दृष्टि ही गुरु का कृपाप्रसाद है, जो कि उनके प्रति शरणागति का प्रसाद है। शास्त्र की इस अपूर्व दृष्टि वे ही प्रदान कर सकते हैं जो स्वयं इस दृष्टि से युक्त है। अतः गुरु के प्रति साक्षात् ब्रह्मस्वरूपता की दृष्टि होनी चाहिए।

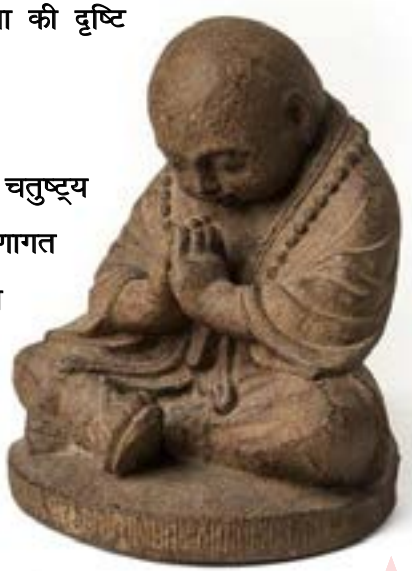

इस श्लोक के माध्यम से ग्रन्थ का अनुबन्ध चतुष्ट्य द्योतित होता है। जो गुरु के प्रति शरणागत होकर पूर्णतः उपलब्ध है, वह ही अधिकारी है। क्योंकि शरणागति से साधन चतुष्टय

की सिद्धि होने लगती है। इसका विषय अपनी ब्रह्मस्वरूपता की एकता का ज्ञान अर्थात् ब्रह्मज्ञान है। प्रयोजन संसरण की समाप्ति अर्थात् मुक्ति है। क्योंकि इस ज्ञान के फलस्वरूप ही अपनी ब्रह्मस्वरूपता में जाग्रति तथा भेदपूर्ण संसार को कल्पित देखा जाना अर्थात् समाप्ति होती है।

इस प्रकार गुरु और परमात्मा की वन्दना करके ग्रन्थ का आरम्भ किया जा रहा है।

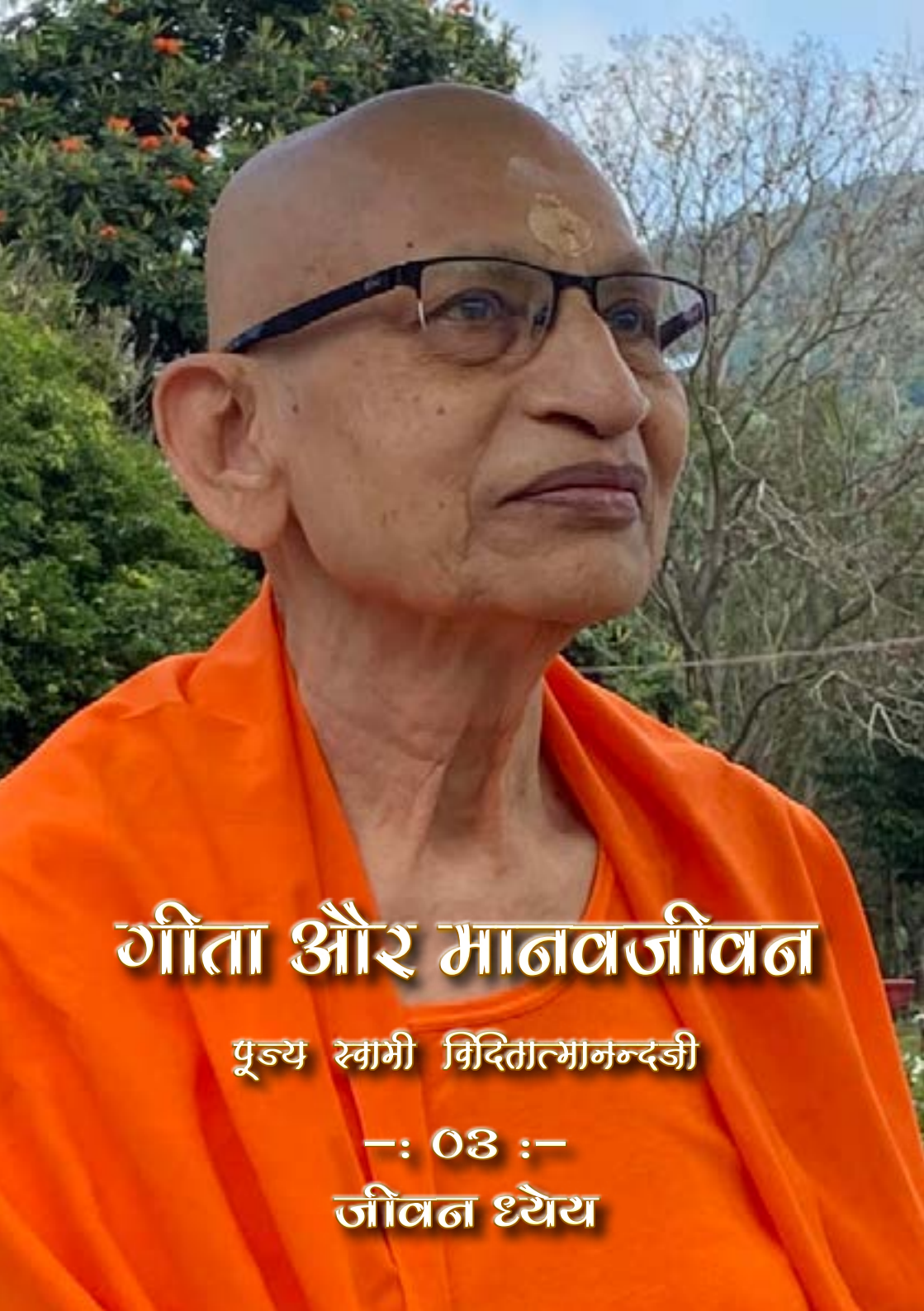

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

—: ०३ :—

जीवन ध्येय

गीता और मानवजीवन

मूलभूत प्रश्न यह है कि जीवन का ध्येय क्या है? धन अर्जित करना, उसका संचय करना, सुख-सुविधा का भोग करना – क्या यही मात्र जीवन का ध्येय है? या उससे भी उत्कृष्ट कुछ है? यह मनुष्य-देह मात्र ऐसे निम्न ध्येय के लिए, मात्र भोग करने के लिए नहीं मिला है। खाना-पीना आदि ही मनुष्य का एक मात्र ध्येय होता तो मनुष्य-देह उसके लिए निकम्मा है। भगवान ने मनुष्य का पेट कितना छोटा बनाया है! दो, पांच, पच्चीस रसगुल्ला खाएंगे, उससे अधिक कितना खाएंगे? खाने के लिए ही भगवान ने हमें देह दिया होता तो शायद सुवर का देह देते, जिससे कि खाते ही रहे और लोटते ही रहे! किन्तु भगवान ने हमें ऐसा देह नहीं दिया है।

भगवान ने हमें मनुष्य-देह रूपी यह साधन दिया है, वह कोई सुख-सुविधा या इन्द्रिय-भोग में व्यर्थ व्यव करने के लिए नहीं

दिया है, यह तो बहुत ही संवेदनशील और उमदा साधन है, और इसलिए उसे मात्र भोगविलास में व्यर्थ नहीं करना चाहिए। सर्जन की छूरी पेन्सिल छिलने के लिए प्रयोग नहीं की जानी चाहिए। कई वस्तु का प्रयोग कैसे करना – यह विवेक हमें होना चाहिए। हमें विवेकपूर्वक विचार करना चाहिए कि यह मनुष्य-जीवन किस प्रयोजन से प्राप्त हुआ है? यह मनुष्य देह भगवान ने हमें किसलिए दिया हैं?

उपनिषद् बताते हैं कि मनुष्य-देहरूपी यह रथ है, पांच ज्ञानेन्द्रियां इसके घोड़ें है, बुद्धि सारथि है और मन लगाम है। इस रथ में विराजमान अहंकार रथ का स्वामी है। भगवान ने यह मनुष्य-उपाधिरूपी उत्कृष्ट वाहन हमें दिया है। वाहन तब ही दिया जाता है कि जब हमें कहीं पहुंचना हो, कोई ध्येय सिद्ध करना हो। इस प्रकार उत्कृष्ट ध्येय सिद्ध करने के लिए ही यह मनुष्य-उपाधि प्राप्त है। उत्कृष्ट ध्येय के प्रति अपनी सदैव दृष्टि रखना आवश्यक है। उससे प्रेरणा हमें प्राप्त हो, उससे एक प्रकार का बल प्राप्त हो। यह बल जिसे प्राप्त हुआ हो, वही निम्न ध्येय को, निम्न प्रकार के जीवन का त्याग कर सकता है।

गीता और मानवजीवन

आप कहेंगे कि 'ऐसा त्याग, जगत में तो कहीं दीखता नहीं है। यहां तो सर्वत्र प्रतिस्पर्धा ही होती हुई दीखाई देती है।' किन्तु उत्कृष्ट ध्येय प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले को यह सब देखादेखी से, इन सब दौड़ से दूर रहना होगा। श्रेष्ठ पुरुषों का हमें अनुसरण करना चाहिए। ऐसे आदर्श श्रेष्ठ पुरुष वर्तमान युग में शायद प्रत्यक्ष हाजिर न भी हो, ऐसे समय में हमें शास्त्र में, अपने आप पर श्रद्धा रखनी होगी। शास्त्र बताते हैं कि 'सत्यमेव जयति नाऽनृतम्' सत्य की ही जय सदैव होती है और झूठ़ की कभी नहीं। सत्य से देवलोक की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। शास्त्र के ऐसे मूलभूत वचनों में श्रद्धा की आवश्यकता है। भले ही रावण की सेना बहुत विशाल हो, बलवान हो, सज्ज हो, किन्तु अन्त में विजय तो श्रीराम की ही होती है। इसलिए श्रीराम जैसा बल व सत्यता होनी चाहिए। यह शक्ति भी सत्य से ही प्राप्त कर सकते है, यदि अपने समक्ष ऐसा महान् लक्ष्य हो तो!

महात्मा गांधीजी का

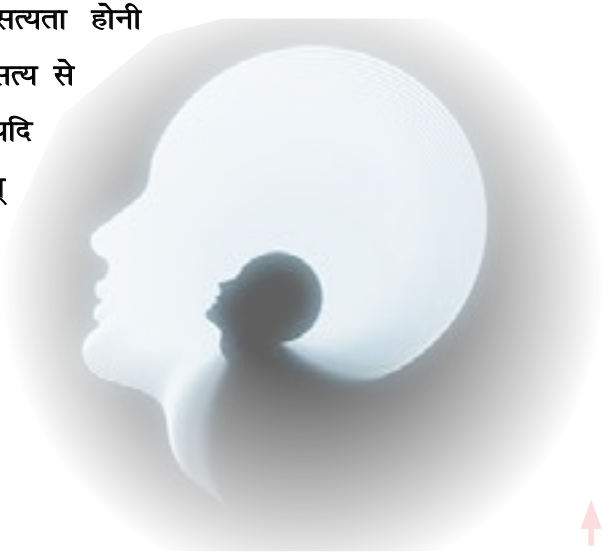

गीता और मानवजीवन

ध्येय था सत्य। प्रत्येक को उनके अधिकार के गौरव के अनुरूप जीने का अवसर मिलना चाहिए और उसमें यदि अन्याय होता हो तो उसके सामने भी लड़ना चाहिए, किन्तु वह भी सत्य और अहिंसा के मार्ग से ही होना चाहिए, हिंसा के मार्ग से नहीं, ऐसा वे दृढ़रूप से मानते थे। क्योंकि उनको शास्त्रवचन 'अहिंसा परमो धर्म' 'अहिंसा ही परं धर्म है' इस पर परं श्रद्धा थी। उनका विश्वास था कि अहिंसा में एक ऐसा सूक्ष्म, आन्तरिक बल है, जिससे बड़ी से बड़ी स्थूल, बाह्य ताकत को भी परास्त कर सकते है। इसलिए आवश्यक साधन तपस्या और श्रद्धा अपने में होने पर उससे प्राप्त बल के द्वारा हम उत्कृष्ट ध्येय के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं और निकृष्ट, भोगप्रधान जीवन को त्याग सकते हैं।

जीवनमुक्त

– ३७ –

उत्तरकाशी

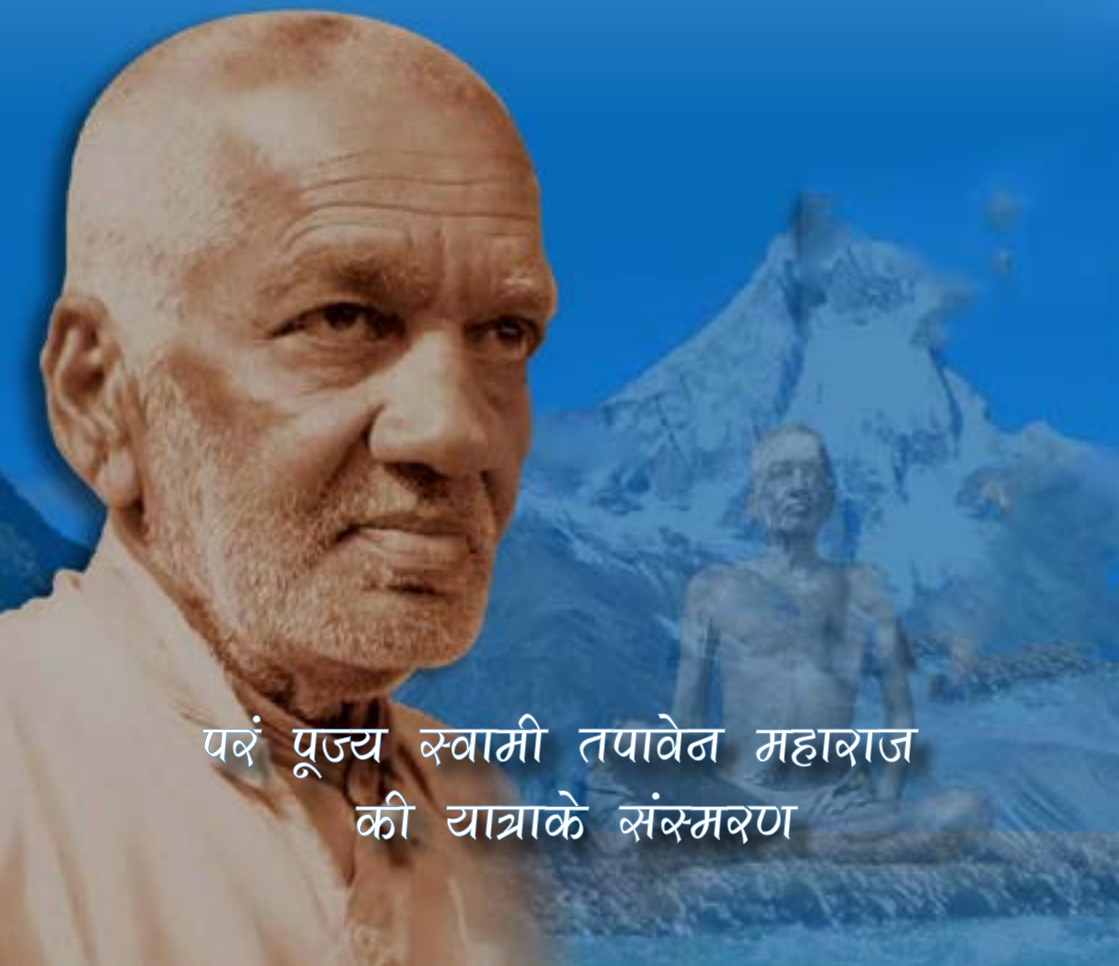

परं पूज्य स्वामी तपोवेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवनमुक्त

थोडी देर के बाद हम यह जान गये कि अब गिरि मस्तक से अवरोहण शुरू हो गया है। चार पांच फर्लांग उतर आने पर हमने देख लिया कि नीचे जाते जाते पाषाण वृष्टि कम होती जा रही है। फिर और नीचे आने पर मालूम हुआ कि वहां केवल वर्षा हुई है, पाषाण वृष्टि जरा भी नही हुई है। जितनी प्रसन्नता हमे इस बात से हुई कि उन अति दरिद्र ग्रामीणों की खेती का नाश नहीं हुआ है, उतनी ही प्रसन्नता हमें इस बात की भी हुई कि हम सुरक्षित लौट आये है।

हमारे प्रत्यागमन पर शुद्ध हृदय ग्रामीणों ने हमारी प्रशंसा की कि, महात्माओं की महिमा तथा सिद्धि के कारण ही पाषाण

वृष्टि नीचे नहीं हुई है, और वे अपनी बढी चढी भक्ति को कई प्रकार से प्रकट किये बिना नही रह सके। जो हो, हमारी इस विषमयात्रा की सफलता का श्रेय हमारे मार्गदर्शक ब्राह्मण नेता की अथवा उस ब्रह्मांड नेता की नेतृत्व कुशलता को था। हमारे इस ब्राह्मण नेता की कार्य कुशलता तो देवता के विश्वास में, ईश्वर के विश्वास में दृढ़ प्रतिष्ठा थी। वस्तुतः ईश्वर का विश्वास दुर्बल को प्रबल बना देता है, अधीर को सुधीर बना देता है। भगवान का विश्वास असमर्थ को सर्वथा समर्थ बना देता है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री मनु और दशरथ चरित्र

— ०६ —

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

मनु और दशरथ चरित्र

महाराज श्री दशरथ को यज्ञ के प्रसादरूप से हुई पुत्रोपलब्धि कोई साधारण न थी। साक्षात् ब्रह्म ही चार पुत्रों के रूप में उनके गृह में अवतरित हुए थे। इस तरह मनु के रूप में की गई उनकी कठिन तपस्या भी फलवती हुई। चारों ओर उनके सौभाग्य की सराहना होने लगी। ब्रह्मा की सृष्टि में होते हुए भी वे ब्रह्मा के गौरव के कारण बनें।

इतनी बड़ी सृष्टि का निर्माण करने पर भी ब्रह्मा यश की तुलना में अयश के ही अधिक भागी बनें क्योंकि उन्होंने जिस संसार का निर्माण किया है वह दोष और गुण के मिश्रण से बना हुआ है। व्यक्ति का यह सहज स्वभाव है कि उसकी दृष्टि दोषों की ओर पहले जाती है और तब सृष्टि निर्माण के लिए ब्रह्मा की सराहना

मनु और दशरथ चरित्र

करने के स्थान पर वह त्रुटियों के लिए उन्हें दोष देकर स्वयं में सन्तुष्ट हो लेता है। विवेकी महापुरुषों से लेकर साधारण जन तक इस प्रकार की समालोचना में एक मत दिखाई देते हैं। यहां तक कि स्वयं प्रभु रामभद्र भी इस लोक परम्परा का पालन करते हुए कैकेयी को दोष मुक्त करने के लिए ब्रह्मा का ही नाम लेते हैं।

गोस्वामीजी कहते हैं कि केवल एक ही स्थान पर ब्रह्मा दोषमुक्त हो सका। यह महत्व ब्रह्मा को महाराज श्री दशरथ के निर्माण के द्वारा प्राप्त हुआ। भले ही वह भगवान् राम का निर्माता न हो किन्तु जिनकी प्रीति और भक्ति से विवश होकर प्रभु अवतरित होने के लिए बाध्य हुए, उन दशरथ का निर्माण उसने ही किया था।

ईश्वर के अवतरित होने की कठिन साधना में सिद्धि प्राप्त करने के बाद वे उस रस की उपलब्धि में सफल होते हैं जो भगवान शिव के लिए भी दुर्लभ प्रतीत होती थी। ब्रह्म उनकी गोद में क्रीड़ा करता हैं। वे रामभद्र की नित्य नूतन बालक्रीड़ा

मनु और दशरथ चरित्र

का आनन्द लेते हैं। राघवेन्द्र जैसा पुत्र पाकर वे कृतकृत्यता का अनुभव करते हैं। उनकी गोद में शिशु ब्रह्म का साक्षात्कार करने के लिए राजमहल के द्वार पर अनगिनत लोगों की भीड़ एकत्र हो जाती है। सभी दशरथ के सौभाग्य की सराहना करते हैं। राघव की विशेषताओं का श्रेय भी उन्हें ही प्राप्त हो जाता है।

पौराणिक गाथा

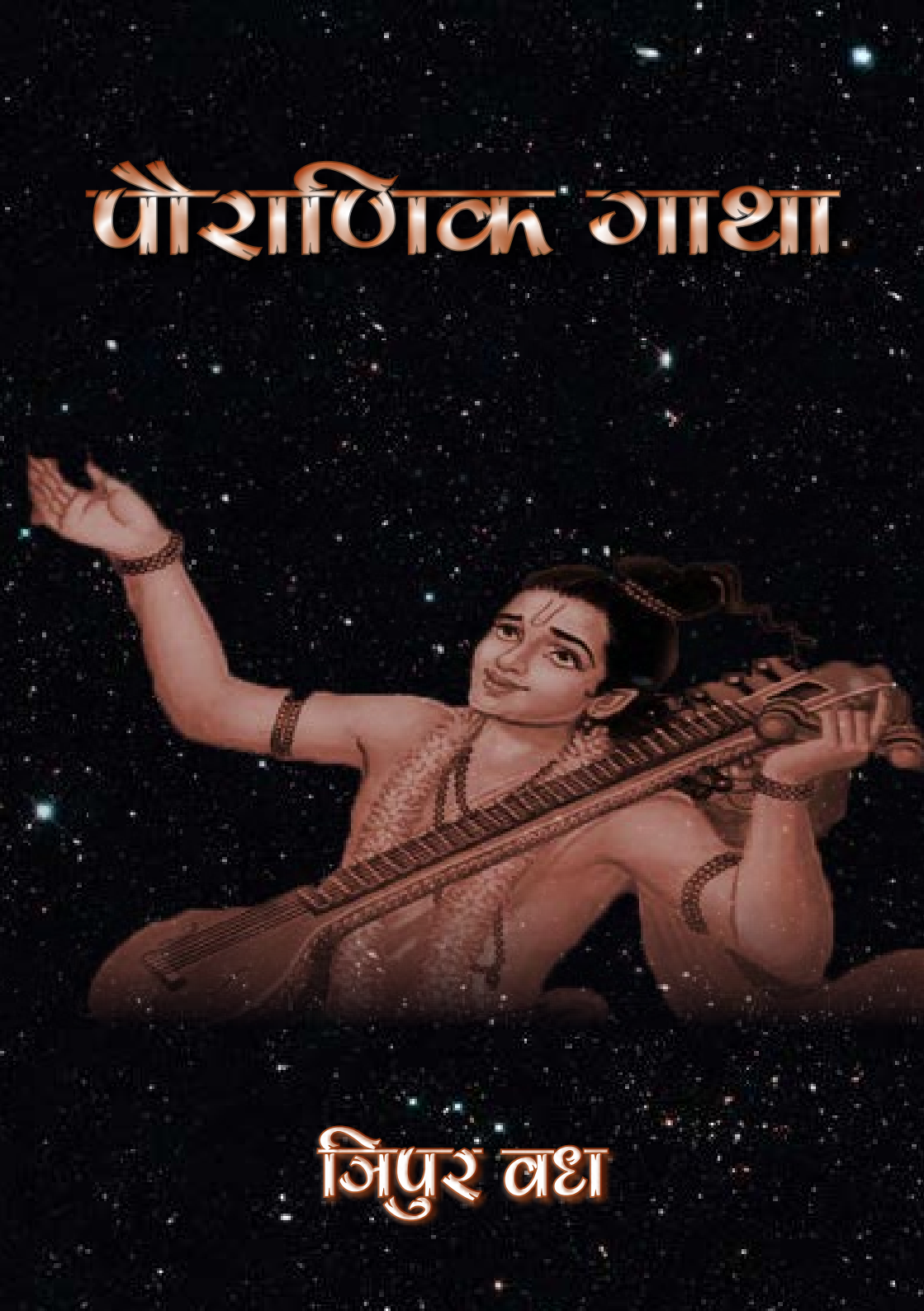

त्रिपुर वध

त्रिपुर वध

तारकासुर के तीन पुत्र थे, तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली। जब भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया तो उसके पुत्रों को बहुत दुःख हुआ। उसका प्रतिशोध लेने के लिए घोर तपस्या करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और एक विचित्र वरदान प्राप्त किया। जिसमें ब्रह्माजी से तीन नगरों का निर्माण करवाने को कहा, जो सतत अन्तरिक्ष में घूमते रहें। हजारो साल में एक बार हमारी नगरी एक रेखा में आएं और उस समय क्षणार्ध के लिए हम तीनों एक रेखा में हो, उस समय यदि किसी भी देवता ने उसका एक बाण से वेधन कर दिया तो हमारी मृत्यु होगी, अन्यथा पुनः हजारों वर्ष तक हम अन्तरिक्ष में घूमते रहेंगे।

ब्रह्माजी के आदेशानुसार मयदानव ने ऐसी तीन नगरी का निर्माण कर दिया, जिसमें एक स्वर्ण की, एक रजत की और एक लोहे की थी। तीनों उन एक एक नगरी मे वास करने लगे। समय बीतने पर वे अपने असुर स्वभाव में जीने लगें और तीनों लोक में आतंक

त्रिपुर वध

मचाने लगे। उनसे संतप्त होकर देवता, ऋषिमुनि आदि भगवान की शरण में गएं। तब महादेवजी ने उसके वध के लिए एक विशेष रथ की मांग करी।

इस रथ के पहिए सूर्य और चन्द्रमा हो, वरुण, यम, कुबेर आदि को रथ के घोडे बनना होगा। ब्रह्माजी रथ के सारथि बनें। सुमेरु पर्वत को धनुष बनना होगा, शेषनाग को उसकी प्रत्यंचा बनना होगा। और उस पर भगवान विष्णु का बाण चड़ाया जाएगा, तब ही हम उसका भेदन करेंगे।

भगवान के आदेशानुसार सब तैयार हो गए और ऐसे दिव्य रथ का निर्माण हो गया। उस दिव्यरथ पर सवार होकर महादेव जब त्रिपुरों का वध करने चलें तो दैत्यों में हाहाकार मच गया। दैत्यों देवताओं में युद्ध छिड़ गया। जैसे ही त्रिपुर एक सीधी रेखा में आए, भगवान शिव ने दिव्य बाण चलाकर उनका नाश कर दिया। त्रिपुरों का नाश होते ही सभी देवता महादेव की जय-जयकार करने लगें। त्रिपुरों का अन्त करने के कारण ही भगवान शिव त्रिपुरारि कहलाएं।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / तत्त्वबोध

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / ध्यान सत्र

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / संस्कृत सत्र

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / वेदिक मन्त्र पाठ

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / भजन एवं स्तोत्रपाठ

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / भोजन कक्ष

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर / संकीर्तन

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

जन्मदिन पर पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद लेते हुए

आश्रम / मिशन समाचार

श्री गंगेश्वर महादेव अभिषेक एवं पूजा

आश्रम / मिशन समाचार

महादेव तुम्हारी जय जय हो...

आश्रम / मिशन समाचार

आत्मेश्वर तुम्हारी जय जय हो...

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

पूज्य स्वामिनीजी का जन्मदिन उत्सव

आश्रम / मिशन समाचार

भक्तों का स्नेह

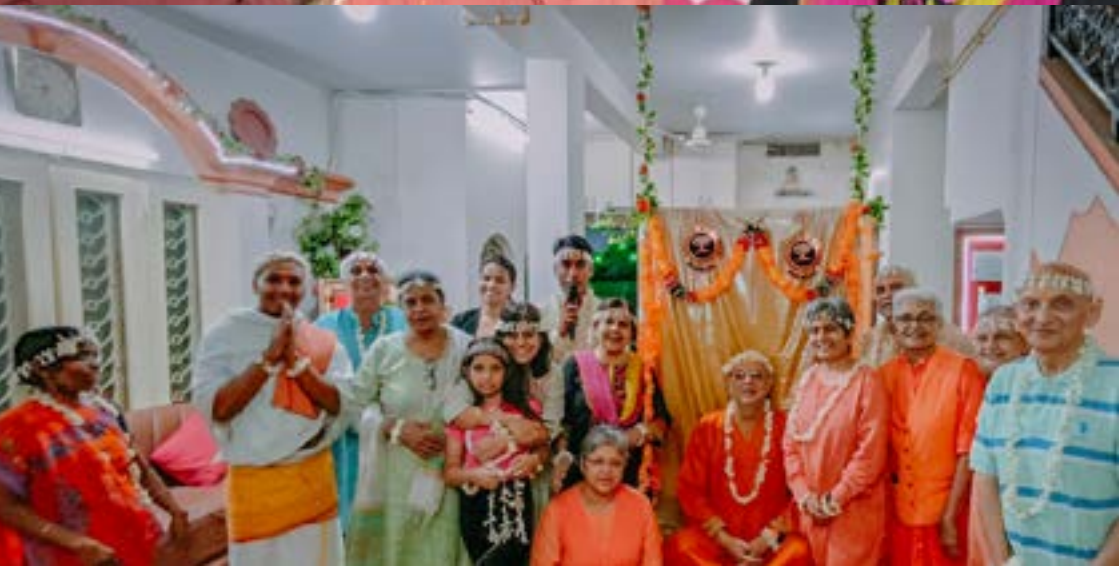

आश्रम / मिशन समाचार

सावन सोमवार झांकी दर्शन

आश्रम / मिशन समाचार

स्वतंत्रता दिन पर महादेव की अनोखी झांकी

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

स्वतंत्रता दिन / जय भारत

आश्रम / मिशन समाचार

भण्डारा आयोजन

आश्रम / मिशन समाचार

अधिक मास शिविर समापन

आश्रम / मिशन समाचार

कृतज्ञता ज्ञापन

आश्रम / मिशन समाचार

ओम् श्री गुरुभ्यो नमः

आश्रम / मिशन समाचार

भण्डारा आयोजन / सुनिल एवं मंजू गर्ग द्वारा

आश्रम / मिशन समाचार

मनकामेश्वर मन्दिर दर्शन

आश्रम / मिशन समाचार

अम्बाझार - प्रकृति दर्शन

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान यज्ञ (Online)

(गीता अध्याय १८ / मोक्ष संन्यास योग)

दि. २० सितम्बर से १४ अक्टूबर तक

प्रतिदिन सायं ७.०० बजे से

(You Tube पर प्रसारण)

अपने स्वजनों की स्मृति में / अन्य निमित्त से
ज्ञानयज्ञ के आयोजन में आहुति प्रदान कर
पुण्यलाभ अर्जित करें।

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता
(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

श्रीमद् भगवद् गीता
साप्ताहिक कक्षाएं / प्रति शनिवार

प्रति शनिवार सायं 5.00 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

~ Tattvabodha

~ Gita Ch. 06 (MIT)

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

~ Sundar Kand Pravachan

~ Prerak Kahaniya

~ Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Kathopanishad Pravachan

~ Shiva Mahimna Pravachan

~ Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu (Guj)

~ Gita Ch. 5 (Guj)

~ Gita Upodghat Bhashya (Guj)

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Sep '23

Vedanta Piyush - Aug '23

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Published by:
Vedanta Ashram, Indore

Editor:
Swamini Amitananda Saraswati